वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 29-11-2007
कटिंग नंबर: .....

दैवी चेतना की जागृति

- महर्षि महेश योगी

अपनी वैदिक परंपरा से भारत को जो ज्ञान मिला है, वह विश्व का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है। आधुनिक विज्ञान की शोधों से भी स्पष्ट हो गया है कि देवी-देवताओं की संस्थाएँ मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय एवं अन्य अंगों में विद्यमान हैं। भावातीत ध्यान और भावातीत ध्यान-सिद्धि कार्यक्रम के अभ्यास से मनुष्य की चेतना जैसे-जैसे भावातीत, परा, भगवद् और ब्राह्मी स्तर तक जागृत हो जाती है, वैसे-वैसे ये देवी-देवता संकल्प मात्र से व्यक्ति और समाज के काम स्वत: पूरा करने लगते हैं।

ज्ञान किताबों से नहीं साधना से प्राप्त होता है और भावातीत ध्यान तथा भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम साधना की सबसे सुगम विधा है। इस यौगिक शैली के नियमित अभ्यास से साधक भावातीत, परा और भगवद्चेतना के पश्चात उस ब्राह्मी चेतना में प्रतिष्ठित हो जाता है, जो अखंड शांत होने के साथ अनन्त क्रियाशीलता का क्षेत्र है। ब्राह्मी चेतना का क्षेत्र कण से लेकर अनन्त तक विस्तारित है। इसी के संदर्भ में श्रुति अणोरणीयान और महतोमहीयान का गान करती है। यह अव्यक्त का क्षेत्र है। इसी क्षेत्र में वेद की पूरी सत्ता, सृष्टि के सारे नियम एक साथ स्थित हैं।

भारत और उसका वैदिक ज्ञान अत्यंत विलक्षण है। इससे यहाँ की जीवनचर्या में जीवन को दैवी चेतना से अनुप्राणित रखने का विधान है। जगह-जगह दैवीपीठें हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं, शक्तिपीठें हैं, तीर्थ हैं। यहाँ का हर दिन किसी न किसी देवता से सम्बद्ध है। भारत के गाँव-गाँव के लोकजीवन में विभिन्न देवी-देवताओं की शक्ति की मान्यता है। और इन्हीं की शक्ति को अपनी तथा सामूहिक चेतना में जागृत करने के लिए समय-समय पर विशिष्ट देवता से जुड़े पर्व-त्योहार हैं। इन अवसरों पर संबंधित देवी-देवता का आवाहन कर उनकी विधिवत पूजा, अर्चना, मंत्रोच्चारण और साधना की जो परंपरा है, उससे सामूहिक चेतना में दैवी चेतना का अनवरत लहरा चलता रहता है। इन पर्वों और त्योहारों में कभी कोई भक्त विष्णु, तो कोई गणेश, कोई शिव, कोई सूर्य, कोई माँ दुर्गा, कोई महालक्ष्मी के सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है। कहीं कोई यज्ञ होता है तो कहीं अनुष्ठान। इस सबसे परिवार, नगर, प्रांत और राष्ट्र की चेतना में दैवी तत्व निरंतर प्रवाहमान रहता है।